M.A Sem-III

Peacock Wisemans Hypothesis

CC-12

एलन टी. पीकॉक और जैक वाइजमैन ने 1890 से 1955 के बीच ब्रिटेन में राज्य की बढ़ती गतिविधियों से सार्वजनिक व्यय के व्यवहार पर अध्ययन किया।

यह परिकल्पना में सुझाव दिया गया है कि सरकारी खर्च सुचारु रूप से या धीरे-धीरे बढ़ने के बजाय एक चरणबद्ध तरीके से बढ़ता है।

पीकॉक और वाइजमैन ने अपनी परिकल्पना में किसी भी देश के तीन अवस्थाओं में सार्वजनिक व्यय के व्यवहार को मुख्य बिन्दु बनाकर बताया है। ये बिन्दु निम्न हैं।

* संकट - पूर्व → सरकारी व्यय अपेक्षाकृत स्थिर रहता है।
* संकट के समय → कोई महत्वपूर्ण सामाजिक या आर्थिक जैसे, प्राकृति विपदा, मंदी, युद्ध इत्यादि के समय सार्वजनिक व्यय में वृद्धि होती है,
* संकट के बाद - व्यय का उच्च स्तर प्राप्त होने के साथ सरकारी व्यय संकट पूर्व के स्तर तक कम नही हो पाता है। कमी तो हो सकता है लेकिन संकट के पूर्व के सार्वजनिक व्यय से अधिक होता है।

इस सिद्धांत के अनुसार व्यय की वृद्धि का मुख्य आधार यह भी होता है राजनीतिक जो मत (वोट) के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। दूसरी और इस सिद्धांत के अनुसार मतदाता सुविधा तो चाहते हैं लेकिन कर (tax) नहीं देना चाहते हैं। लेकिन सरकार इतना कर अवश्य लगाती है जिसको आम - आदमी भी वहन कर सके। आपात काल और युद्ध काल में अधिक कर देने के लिए लोग मुख्यत: तैयार हो जाते हैं जिससे सार्वजनिक व्यय

में वृद्धि हो जाती है किन्तु युद्ध के समाप्ति के बाद सार्वजनिक व्यय कम तो हो जाता है लेकिन संकट पूर्व के स्तर पर नहीं आता है। एवं कर की दर को भी पुराने स्तर पर नहीं आता जिसको विस्थापन प्रभाव कहा जाता है। निरीक्षण प्रभाव के द्वारा संकट के बाद उत्पन्न दुष्परिणामों को कम करने के लिए भी सार्वजनिक व्यय में वृद्धि होता है।

केन्द्रीयकरण या एकाग्रता प्रभाव के द्वारा सरकार को आर्थिक विकास के लिए आधारभूत संरचनाओं का विकास करना आवश्यक है जिससे सरकार का सार्वजनिक व्यय बढ़ जाता है।

आलोचना →

(i) केवल आपातकालीन स्थितियों के कारण ही नहीं बल्कि कल्याणकारी योजनाओं एवं योजनाबद्ध विकास के कारण भी सार्वजनिक व्यय में वृद्धि किया जाता है लेकिन इस परिकल्पना में युद्ध (संकट) पर विशेष बल दिया गया है।

(ii) जनसंख्या में वृद्धि, शहरीकरण, रोजगार सृजन, महंगाई, इत्यादि कारण से भी सार्वजनिक व्यय बढ़ जाता है।

(iii) 1960 के दशक में देखा गया है कि युद्ध नहीं होने के बाद भी पश्चिमी देशों में सार्वजनिक व्यय में वृद्धि हुई है।

(iv) पीकॉक – वाइजमैन ने (1890-1955) ब्रिटेन के द्वारा अध्ययन करके यह परिकल्पना दी है, जो पूरे विश्व में लागू नहीं किया जा सकता है।